स्वदेशी जागरण मंच
की
विकास यात्रा

इस पुस्तिका के बारे में

स्वदेशी जागरण मंच, नवजात शिशु (22 नवंबर 1991), अब युवा होकर 23 वर्ष का हो गया है। इसके विकास क्रम की भी एक गाथा बन गई है। अमृतसर के विचार वर्ग (जून 2013) में अखिल भारतीय संयोजक श्री अरूण ओझा जी का एक भाषण 'स्वदेशी की विकास यात्रा' विषय पर हुआ। उसी को आधार मानकर, विचार किया गया कि यह विषय कार्यकर्ताओं, शुभचिन्तकों के लिए आवश्यक व रूचिकर है। इसलिए इसे पुस्तिका रूप में प्रकाशित किया जाए। समयाभाव या अन्य कारण से जो विषय उस भाषण में छूट गए उन्हें अन्यत्र स्थानों से ले लिया गया है। ताकि यथासंभव पूर्ण विषय आ सके। साथ ही कार्यकर्ताओं के लिए करणीय, ऐसे सात बिन्दू भी दिए गए है, जिनके उपयोग से मंच को आगे बढ़ाने में सुविधा होगी। अपना वैचारिक अधिष्ठान सदा स्पष्ट होता रहे, इस हेतु माननीय दत्तोपंत ठेंगड़ी जी के समय–समय पर हुए उद्‌बोधन में से कुछ 'विचार–कणिकाएं' भी दी गई है। आशा है सुधी पाठकजन इस पुस्तिका से अवश्य लाभांवित होंगे।

विचार है कि इसका संशोधित व अधिक व्यापकता वाला संस्करण शीघ्र प्रकाशित किया जाए। इस हेतु यदि आपके सुझाव या सामग्री हो, तो अवश्य स्वदेशी जागरण मंच को उपलब्ध कराएं।

धन्यवाद

संपादक

स्वदेशी गंगा के भगीरथ

दत्तोपंत ठेंगडी – संक्षिप्त जीवन परिचय

स्वदेशी जागरण मंच की विकास यात्रा को जानने के लिए आवश्यक है कि इस स्वदेशी गंगा को लाने वाले भगीरथ के बारे में पहले परिचय प्राप्त किया जाए। राष्ट्रऋषि दत्तोपंत ठेंगड़ी ही वे भगीरथ थे जिन्होंने भारत की आर्थिक विकास यात्रा की ठीक दिशा निर्धारण करने के लिए स्वदेशी जागरण मंच का गठन किया।

श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी का जन्म दीपावली वाले दिन (10 अक्टूबर, 1920) को ग्राम आर्वी (जिला वर्धा, महाराष्ट्र) में हुआ था। वे बचपन से ही स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रहे। 1935 में वे 'वानरसेना' के आर्वी तालुका के अध्यक्ष थे।

जब उनका संपर्क डॉ. हेडगेवार से हुआ तो संघ के विचार उनके मन में गहराई से बैठ गए। उनके पिता उन्हें वकील बनाना चाहते थे, परन्तु दत्तोपंत जी एम.ए. तथा कानून की शिक्षा पूर्णकर 1941 में प्रचारक बन गए। प्रारंभ में उन्हें केरल भेजा गया। वहां उन्होंने 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' का काम भी किया। केरल के बाद उन्हें बंगाल और फिर असम भी भेजा गया।

श्री ठेंगड़ी के संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी के कहने पर मजदूर क्षेत्र में कार्य प्रारंभ किया। इसके लिए उन्होंने इंटक, शेतकरी कामगार फेडरेशन जैसे संगठनों में जाकर काम सीखा। साम्यवादी विचार के खोखलेपन को वे जानते थे। अतः उन्होंने 'भारतीय मजदूर संघ' नामक अराजनीतिक संगठन प्रारंभ किया, जो आज देश का सबसे बड़ा मजदूर संगठन है।

उनके प्रयास से श्रमिक और उद्योग जगत में नए संबंध बने। कम्युनिस्टों के नारे थे, ''चाहे जो मजदूरी हो, मांग हमारी पूरी हो, दुनिया के मजदूरों एक हो, कमाने वाला खायेगा''। मजदूर संघ ने कहा, ''देश के हित में करेंगे काम, काम के लेंगे पूरे दाम, मजदूरों दुनिया को एक करो, कमाने वाला खिलायेगा''।

इस सोच से सारे मजदूर क्षेत्र का दृश्य की बदल गया। अब 17 सितंबर को श्रमिक दिवस के रूप में 'विश्वकर्मा जयंती' पूरे देश में मनाई जाती है। इससे पूर्व भारत में भी 'मई दिवस' ही मनाया जाता था।

श्री ठेंगड़ी 1951 से 1953 तक मध्य प्रदेश में भारतीय जनसंघ के संगठन मंत्री रहे, पर मजदूर क्षेत्र में आने के बाद उन्होंने राजनीति छोड़ दी।

1964 से 1976 तक दो बार वे राज्यसभा के सदस्य रहे। उन्होंने विश्व के अनेक देशों का प्रवास किया।

वे हर स्थान पर मजदूर आंदोलन के साथ–साथ वहां की सामाजिक स्थिति का अध्ययन भी करते थे। इसी कारण चीन और रूस जैसे कम्युनिस्ट देश भी उनसे श्रमिक समस्याओं पर परामर्श करते थे। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, भारतीय किसान संघ, सामाजिक समरसता मंच आदि की स्थापना में भी उनकी प्रमुख भूमिका रही।

भारत 1947 में आजाद तो हुआ किन्तु हमने अपनी आर्थिक, सांस्कृतिक नीतियां विदेशी ही जारी रखी। 1990 आते–आते देश आर्थिक भंवर में फंस गया। जब भारत को भारतीय दृष्टिकोण से ओत–प्रोत आर्थिक व सांस्कृतिक नीतियों पर लाने के लिए देश के विद्वान चिंतित थे। इस काम को भी पूर्ण करने का निश्चय दत्तोपंत ठेंगडी ने किया। उन्होंने 1991 में नागपूर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री एम.जी. बोकारे तथा अन्य 22–25 विद्वानों के साथ परामर्श करते हुए स्वदेशी जागरण मंच का गठन किया। जो आगे चलकर आर्थिक क्षेत्र का पुरोधा आंदोलन बन गया।

26 जून, 1975 को देश में आपातकाल लगने पर ठेंगड़ी जी ने भूमिगत रहकर 'लोक संघर्ष समिति' के सचिव के नाते कांग्रेस और प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की तानाशाही के विरूद्ध हुए आंदोलन को संचालित किया। 1977 में जनता पार्टी की सरकार बनने पर जब अन्य नेता कुर्सियों के लिए लड़ रहे थे, तब ठेंगड़ी जी ने मजदूर क्षेत्र में काम करना ही पसन्द किया।

2002 में राजग शासन द्वारा दिए जा रहे 'पद्‌मभूषण' अलंकरण को उन्होंने यह कहकर ठुकरा दिया कि जब तक संघ के संस्थापक पूज्य डॉ. हेडगेवार और श्री गुरुजी को 'भारत रत्न' नहीं मिलता, तब तक वे कोई अलंकरण स्वीकार नहीं करेंगे। मजदूर संघ का काम बढ़ने पर लोग प्रायः उनकी जय के नारे लगा देते थे। इस पर उन्होंने यह नियम बनवाया कि कार्यक्रमों में केवल भारत माता और भारतीय मजदूर संघ की ही जय बोली जायेगी।

14 अक्टूबर 2004 को उनका देहांत हुआ। श्री ठेंगड़ी जी अनेक भाषाओं के ज्ञात थे। उन्होंने हिन्दी में 28, अंग्रेजी में 12 तथा मराठी में तीन पुस्तकें लिखीं। इनमें लक्ष्य और कार्य, एकात्म मानवदर्शन, ध्येयपथ, बाबासाहब भीमराव अंबेडकर, सप्तक्रम, हमारा अधिष्ठान, राष्ट्रीय श्रम दिवस, कम्युनिज्म अपनी ही कसौटी पर, संकेत रेखा, राष्ट्र, थर्ड वे आदि प्रमुख हैं।

❑❑❑

स्वदेशी जागरण मंच : विकास यात्रा

भूमिका

इस सत्र में जो विषय मुझे बताया गया है कि स्वदेशी जागरण मंच की जो प्रवास यात्रा है, जहाँ से हमने चलना आरम्भ किया था, मार्ग में पड़ाव आते गये और अभी तक का जो यह प्रवास क्रम हमने पूरा किया है उसकी जानकारी इस सत्र में दी जाए। अब यह विचार वर्ग है, सभा सम्मेलन नहीं है। सभा सम्मेलन में मीडिया को, आम जनता को, अपने समर्थकों को अपने बारे में बताते एवं जानकारी देते है। जबकि विचार वर्ग में तो हमको जानकारी दूसरों को नहीं देना है, बल्कि हमें स्वंय अपने बारे में जानकारी लेना है। यानि **अपनों के बीच, अपनी जानकारी।** यह सभा सम्मेलन और विचार वर्ग में अन्तर है। विकास यात्रा से तात्पर्य है कि स्वदेशी जागरण मंच के आज के विराट स्वरूप धारण की गाथा। स्वदेशी जागरण मंच क्या है? यह जानकारी सबको होनी चाहिये, हम किस वंश से जुडें है, किस कुल से उत्पन्न हुए हैं, कौन सी हमारी परम्परा है, हमारा इतिहास क्या है, किस मुहुर्त में, किस नक्षत्र में हमारा जन्म हुआ है, हमारा लालन पालन कैसा रहा है, यानि कुल मिलाकर स्वदेशी जागरण मंच, मंच के नाते जब इस धरती पर आया तब से लेकर आज तक, हमारी यात्रा का क्रम कैसा रहा है? लम्बा इतिहास है। परन्तु समय सीमा के मर्यादा में उतना लम्बा इतिहास विस्तारपूर्वक बताना सम्भव नहीं होगा। कुछ महत्वपूर्ण, लेकिन मील स्तम्भ कहे जा सके ऐसे तथ्य, मैं रखने का प्रयत्न करुगाँ।

दूसरा स्वातन्त्र्य युद्ध : आर्थिक स्वतंत्रता हेतु

यह जो विकास यात्रा है, यह स्वदेशी की नहीं मंच की विकास यात्रा है। यह देश जब राजनीतिक स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ रहा था, जब हम अंग्रेजों के गुलाम हुए थे, दासता का युग उससे पूर्व भी था। विशेषकर अंग्रेजों के गुलामी के दौर में जिन परिस्थितियों का निर्माण इस देश के अन्दर हुआ, उसमें स्वदेशी का भाव, स्वदेशी के कार्यक्रम इनका प्रस्फुटन हुआ था। स्वदेशी का सबसे पहला आंदोलन बंग–भंग आंदोलन, श्री लाल बाल पाल के नेतृत्व में लड़ा गया। आजादी मिलने के बाद ही और जिस प्रकार से विदेशी ताकतों का हमारे नीति निर्धारण में जो प्रभाव दिखाई देने लगा, उसके कारण समय समय पर स्वदेशी की माँग उठती रही है। विशेषकर जब विश्व बैंक के दबाव में 1965 ई. में सिन्धु जल बटवारे का समझौता भारत

और पाकिस्तान के मध्य हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक **परम् पूज्य गुरू जी ने देश की सरकार और जनता को उस समय सावधान किया था** कि नीतियों के निर्धारण के मामले में, किसी दूसरे देश से समझौता करने के मामले में, सरकार विदेशी प्रभाव में न आएं। **सिन्धु जल समझौता विश्व बैंक के दबाव में किया गया। राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के बाद यह एक प्रकार से आर्थिक परतन्त्रता है।** जिसका उदाहरण यह जल बँटवारा था।

परम् पुज्य गुरु जी ने 1965 में ही जो विचार व्यक्त किया, वह स्वदेशी का ही विचार था। लेकिन कुल मिलाकर मंच के नाते हम स्वदेशी आन्दोलन चला रहे हैं। जिसको हमने कहा है कि यह स्वदेशी आन्दोलन आर्थिक स्वाधीनता के लिए एक युद्ध है। यह द्वितीय स्वतन्त्रता युद्ध है। इस शब्द का प्रयोग हमने किया। आज कल 'आर्थिक स्वतन्त्रता का दूसरा संग्राम' शब्द का प्रयोग बहुत लोग कर रहे हैं। लेकिन इस शब्द का प्रयोग सबसे पहले दत्तोपंत ठेंगड़ी जी ने 1982 में किया था। उस समय उन्होंने कहा था कि देश एक आर्थिक परतन्त्रता के युग में जा रहा है और आर्थिक परतन्त्रता से मुक्ति के लिए हमें दूसरा स्वाधीनता संग्राम लड़ना पड़ेगा। 1984 ईसवीं मे इन्दौर में भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्तों का एक पाँच दिनों का अभ्यास वर्ग लगा था, जो बहुत ऐतिहासिक था, उस वर्ग में मैं भी उपस्थित था। उसी समय देश की प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की हत्या हो गयी थी। तीन दिनों में ही वर्ग का समापन करना पड़ा। पूरा देश एक संकट के दौर से गुजर रहा था। इन्दौर भी उसी के प्रभाव में था।

यह थोड़ा अलग प्रसंग है। लेकिन उस दृष्टि से भी इन्दौर का अभ्यास

> *''रॉबर्ट सैम्युअलसन जैसे अमेरिकी पूंजीवाद के प्रमुख प्रवक्ता भी यह लिखने में संकोच नहीं कर रहे हैं कि द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् सर्वसाधारण अमेरिकी नागरिकों के मन में अमेरिका की समृद्धि के विषय में जो एक मोहमय धारणा निर्माण हुई थी वह एक मृगमरीचिका मात्र थी। यह सिद्ध हुआ है और इस कारण उनका 'एज ऑफ एनलायटनमेंट' का युटोपिया नष्ट हो रहा है। इस कारण उनका धैर्य अब समाप्त हो रहा है। अपनी अर्थव्यवस्था को जैसे–तैसे टिकाए रखने के लिए अविकसित देशों का पूर्णरूपेण शोषण करने का उनका षड्यंत्र है। जो पहले से ही चल रहा था।''* – **(दत्तोपंत ठेंगड़ी)**

वर्ग एक ऐतिहासिक था। क्योंकि उसी समय पहली बार सभी कार्यकर्ताओं के सामने आर्थिक पराधीनता और दूसरा स्वातन्त्र आन्दोलन के बारे में राष्ट्रऋषि दत्तोपंत ठेंगड़ी जी ने अपने विचार रखे थे। तब भारतीय मजदूर संघ ने यह काम आरम्भ किया था और उसके बाद 1984 ई. के ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने अपने मुम्बई अधिवेशन में पहली बार स्वदेशी व आर्थिक स्वातन्त्रय संग्राम जैसी बातें दोहरायी। **मंच के नाते स्वदेशी जागरण मंच का 22 नवम्बर 1991 को गठन हुआ।** 1982 ई. से भारतीय मजदूर संघ ने 'आजादी की दूसरी लड़ाई' शब्द का प्रयोग आरम्भ किया, यह अपना कार्य उसी का विस्तार था।

नई आर्थिक नीतियां : विनाश को निमंत्रण

1991 में जब लोकसभा के चुनाव हुए और इस चुनाव में किसी दल को बहुमत प्राप्त नहीं हुआ। काँग्रेस सबसे बड़े दल के रुप में उभरी थी। श्री नरसिहं राव जी के नेतृत्व में सरकार का गठन हुआ और डॉ. मनमोहन सिंह वित्त मंत्री बने। तब डॉ. मनमोहन सिंह कांग्रेस पार्टी के सदस्य नहीं थे और उन्होंने चुनाव नहीं लड़ा था। वित्तमंत्री रहने के नाते 24 जुलाई 1991 को भारतीय संसद में एक प्रस्ताव लाएं जिसमें देश की गिरती आर्थिक स्थिति, और पूर्व की सारी सरकारों की आलोचना की (यद्यपि ज्यादा दिनों तक सरकारें कांग्रेस की ही रही थी और बहुत लम्बे समय तक उन सरकारों के सलाहकार स्वयं डॉ. मनमोहन सिंह थे। प्रमुख आर्थिक सलाहकार रहे, रिजर्व बैंक के गवर्नर रहे, यानि कि इन्हीं के सलाह पर और इन्ही के निर्देशन में सरकार आर्थिक नीतियाँ तय करती रही थी।) 24 जुलाई को डॉ. मनमोहन सिंह ने पूर्व की सारी नीतियों की आलोचना करते हुए, **नयी आर्थिक नीतियों की घोषणा की, जो कि 1 अगस्त 1991 से लागू हुई।**

''वैसे ही इंटरनेशनल मॉनिट्री फंड (IMF) के टॉप ऑफिशियल डेविसन एलबुग ने तो यहां तक लिखा है कि ''मैने इंटरनेशनल मोनिट्री फण्ड में रहते हुए इतना पाप कर्म किया है कि गरीब लोगों का खून मेरे हाथ पर है और दुनिया की सारी नदियां आकर भी मेरा हाथ साफ नहीं कर सकतीं, इतना खून मेरे हाथ पर है। इसका मुझे पश्चाताप हो रहा है।' विश्व व्यापार संगठन इसीलिए स्थापित किया गया कि उसके अंदर सब देश आ जाएं, सब देश आते हैं तो उसमें जो गोरे देश हैं वे गैर–गोरे देशों पर अपना प्रभाव जमा सके।'' – **(दत्तोपंत ठेंगड़ी)**

ये नई आर्थिक नीतियाँ क्या थीं? प्रस्ताव में तो ये उल्लेखित किया गया कि देश गहरे आर्थिक संकट में फँस गया है, भुगतान संतुलन का संकट है। अर्थात् देश को बाहर से वस्तुएं मंगाने के लिए विदेशी मुद्रा नहीं है, आय की विषमता हो गयी है, बेकारी फैल रही है, गरीबी फैल रही है, ये सब कुल मिलाकर देश एक भंयकर आर्थिक संकट में फँस गया है और इसमें से निकलने का एक मात्र उपाय – नयी आर्थिक नीति को लागू करना है। (जिसका परिणाम यह हुआ कि हमें 2600 टन सोना गिरवी रखना पड़ा।) इस देश में विदेशी पूँजी को आमंत्रित किया जाए। यानि कि देश अपने पैरों पर विकास नहीं कर सकता, अपने सामर्थ्य के बल पर ये देश खड़ा नहीं हो सकता, इसलिए विदेशी पूँजी की बैसाखी देश के लिए आवश्यक है। नियमों में ढील दी गयी। कस्टम्स ड्युटी घटायी गयी। जो क्षेत्र प्रतिबन्धित थे, उनको खोला गया यानि कि विदेशी पूँजी को यहाँ खुलकर खेलने का मौका, नयी आर्थिक नीतियों के माध्यम से दिया गया। परिणाम क्या हुए ? यह एक लम्बा और दूसरा विषय है।

स्वदेशी जागरण मंच – गलत आर्थिक नीतियों का राष्ट्रवादी उत्तर

जब ये नीतियाँ आयी तो ऐसे में जो राष्ट्रवादी लोग थे जिन्हें संघ परिवार कहा जाता था, की बैठक नागपुर में हुई। उस बैठक में एक निर्णय–प्रस्ताव पारित किया गया कि नयी आर्थिक नीतियों के कारण जो संकट खड़ा हो गया है, वह देश को फिर से गुलामी के नये दौर की ओर प्रवेश कराने वाला है।

यानि हजार, बारह सौ वर्षों तक हमने गुलामी के खिलाफ संघर्ष किया, कभी हारे, कभी विजयी रहे, लेकिन अंततः हम 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों के खिलाफ विजयी हुए और विश्व क्षितिज पर भारतवर्ष का एक नये देश के नाते उदय हुआ। अब फिर से ये खतरा उत्पन्न हो गया है कि भारत वर्ष एक नये गुलामी के दौर में प्रवेश करने वाला है। अगर **एक बार हम आर्थिक गुलामी में प्रवेश कर गये तो शायद हम राजनीतिक स्वतन्त्रता भी अक्षुण्ण नहीं रख पायेगें।** ऐसा एक नया खतरा इस देश के सामने उत्पन्न हो गया है। इस खतरे से निकलने का एक ही मार्ग है कि स्वदेशी जागरण मंच को औजार के रुप में उपयोग करके, आर्थिक स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी जाए, ऐसा संघ की उस नागपुर बैठक में कहा गया।

चूँकि आक्रमण का प्रकार नया था, इस देश ने अभी तक आक्रमण बहुत झेले थे, कुछ शारीरिक, कुछ मानसिक आक्रमण झेले थे। किन्तु यह एक

शक्ति के द्वारा एक प्रकार का आक्रमण हुआ करता था जिसका हमने सामना किया था। परन्तु यह जो नया आक्रमण का दौर आरम्भ हुआ इसका प्रकार थोड़ा भिन्न हो गया था। देश ने इसके पूर्व इस प्रकार का आक्रमण नहीं देखा था। इसमें समाज जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं था, जिस पर आक्रमण ना हुआ हो। यह केवल विदेशी पूँजी भारत नहीं आ रही थी, केवल अमेरिका का डॉलर नही आ रहा था, यह विदेशी पूँजी और **अमेरिकी डॉलर के साथ–साथ एक विदेशी विचार–संस्कृति का आक्रमण भी हो रहा था।** जिसको अप–संस्कृति कहते हैं। सांस्कृतिक आक्रमण हमारे देश पर शुरू हुआ। क्योंकि डॉलर अकेला नहीं आ रहा था, डॉलर एक विशेष प्रकार की विकृति अपने साथ लेकर के आ रहा था। यह विदेशी संस्कृति का आक्रमण था। क्योंकि उनकी भी एक संस्कृति है। तो एक नया दौर जीवन के सभी क्षेत्रों में आरम्भ हुआ। यह जो नये प्रकार के आक्रमण शुरु हुए, इन्हें पारम्परिक हथियारों से नहीं लड़ा जा सकता। किसी एक संगठन के बूते की बात नहीं रही। हमारे यहाँ संगठन तो कई थे। कहीं मजदूर संघ लड़ रहा था, तो कहीं विद्यार्थी परिषद्। कहीं धर्म के क्षेत्र में विश्व हिन्दु परिषद, तो कहीं शिक्षा के क्षेत्र में विद्या भारती, कहीं किसानों की समस्याओं को लेकर भारतीय किसान संघ। ये सब लड रहे थे।

नये हथियार के नाते, स्वदेशी जागरण मंच का गठन किया गया और स्वदेशी जागरण मंच की संचालन समिति बनायी गई। जिसमें सात प्रमुख संगठन थे। राजनीति के क्षेत्र में काम करने वाली भारतीय जनता पार्टी, मजदूर क्षेत्र में काम करने वाला भारतीय मजदूर संघ, किसान क्षेत्र में काम करने वाला भारतीय किसान संघ, विद्यार्थियों के बीच काम करने वाला अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, शिक्षा के लिए विद्या भारती, महिलाओं और भगिनियों के लिए काम करने वाली राष्ट्रसेविका समिति, ऐसे राष्ट्रवादी संगठनो को मिलाकर स्वदेशी जागरण मंच का गठन हुआ। अर्थात् **स्वदेशी का गठन एक संस्था के रुप में नहीं हुआ।** मंच को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण विषय है कि स्वदेशी जागरण मंच एक संस्था नहीं है बल्कि आंदोलन है। देश में अनेक प्रकार की संस्थाएं चल रही हैं। एक–एक विषय को लेकर काम करने वाली। स्वदेशी जागरण मंच एक मंच है जो स्वदेशी के लिए काम करता है। **स्वदेशी को लेकर काम करने वाले चाहे किसी भी विचारधारा के हो, लेकिन आर्थिक स्वतंत्रता का विषय उनको प्रिय है तो वे स्वदेशी जागरण मंच के साथ काम कर सकते है।**

इसलिए जैसे ही स्वदेशी जागरण मंच बना, वैसे ही फरवरी 1992 में पहली बार 15 दिनों का पूरे देश भर में हमने एक जन सम्पर्क अभियान लिया। लगभग तीन लाख गांवों में हमारे कार्यकर्ता गए। एक सूची दी, हमने कि स्वदेशी वस्तु क्या है, विदेशी वस्तु क्या है? साथ ही जनता से आग्रह किया कि अगर हमें इस आर्थिक संग्राम में विजयी होना है तो स्वदेशी वस्तु का अंगीकार करें और विदेशी वस्तु का बहिष्कार करें। इस आन्दोलन ने पूज्यनीय महात्मा गाँधी के नेतृत्व में जो एक आन्दोलन चला था, बहिष्कार का आन्दोलन, विदेशी वस्तुओं के होली जलाने का आन्दोलन, उसकी स्मृति को ताजा कर दिया। एक नये प्रकार का स्वदेशी–अंगीकार और विदेशी–बहिष्कार का आन्दोलन हुआ जिसकी गूँज भारतवर्ष के गाँव–गाँव तक पहुंची। सेकुलर कहे जाने वाले लोग, कम्युनिस्ट कहे जाने वाले लोग भी स्वदेशी जागरण मंच में आ गये। इसका पहला अखिल भारतीय सम्मेलन 3,4,5 सितम्बर 1993 को दिल्ली में हुआ और आपको यह जानकार आश्चर्य होगा कि उस **सम्मेलन का उद्घाटन** इस देश के बहुत बडे मार्क्सवादी विचारक और **सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जस्टिस वी.आर. कृष्ण अय्यर ने किया** और उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि उन्हें उनके कई मित्रों ने इसमें आने के लिए मना किया था, क्योंकि स्वदेशी जागरण मंच आर.एस.एस. का है। मित्रों की बातों को दरकिनार करते हुए मैं यहाँ आया हूं और मंच के माध्यम से, जस्टिस अय्यर ने कहा था कि देश का भला सोचने वाले सारे लोगों को अपने मतभेदों को दरकिनार करते हुए स्वदेशी के मंच पर आना चाहिये और देश में एक नया स्वदेशी आन्दोलन खड़ा करना चाहिए।

विरोधी बने समर्थक

जस्टिस अय्यर ने इस देश के नकली बुद्धिजीवियों को लताड़ा। कठित बुद्धिजीवियों के लिए कठोर शब्दों का प्रयोग किया। अंग्रेजी में उन्होने कहा कि **आज के भारतीय बुद्धिजीवी अमेरिका के कालगर्लस्** बन गये है।

> *"ये (बहुराष्ट्रीय कंपनियां, WTO, IMF... आदि) वास्तव में दुष्ट लोग हैं, जो दुनिया को खा कर, हम कैसे मजे में रह सकते हैं, हमारा कन्ज्युमेरिज्म कैसे चल सकता है, यह सोचने वाले हैं। इन वैश्विक शक्तियों के खिलाफ हम साधनविहीन होते हुए भी देशभक्ति के आधार पर लड़ सकते हैं, यह दृढ़ सत्य है। हम विजयी होंगे ही।"*
>
> – **(दत्तोपंत ठेंगड़ी)**

जस्टिस अय्यर ने राजनेताओं का आह्वान किया कि सारे मतभेदों को भुलाकर स्वदेशी जागरण मंच पर आइये। यह देश की आवश्यकता है। स्वदेशी जागरण मंच के प्रथम अखिल भारतीय संयोजक डॉ. एम.जी. बोकरे बने। स्वयं डॉ. बोकरे इस देश के गिने चुने मार्क्सवादी बुद्धिजीवियों में थे। डॉ. बोकरे ने एक बड़े ग्रन्थ 'हिन्दु–इकोनोमिक्स' की रचना की। डॉ. बोकरे नागपुर विश्वविद्यालय के वाइस–चांसलर और अर्थशास्त्र के अध्यापक थे। उन्होंने अपने पहले उद्बोधन मे कहा कि माननीय दत्तोपंत ठेंगड़ी जी को जितनी गालियाँ नागपुर में पड़ी, उसमें देने वालों में पहला नाम डॉ. बोकरे का था। वही बोकरे दत्तोपंत ठेंगड़ी जी द्वारा स्थापित, स्वदेशी जागरण मंच के पहले संयोजक बने। उन्होंने कहा कि मैंने रिटायरमेन्ट के बाद हिन्दू धर्मग्रन्थों का अध्ययन किया। जैसे कौटिल्य का अर्थशास्त्र, शुक्रनीति, वेदों एवं उपनिषदों का। इनके अध्ययन के बाद मुझे लगा कि भारत में अर्थशास्त्र के अध्ययन की सुदीर्घ परम्परा रही है। इसके बाद मैंने **हिन्दू इकोनोमिक्स** लिखा। इस प्रकार स्वदेशी जागरण मंच का शुभारम्भ हुआ।

इसी तरह 1994 में हमने दूसरा अखिल भारतीय अभियान लिया। 1992 के अभियान में केवल सूची दी थी कि स्वदेशी अपनाओ और विदेशी हटाओ। 1994 के अभियान में हमने कुछ बातें जोड़ीं। सूची के साथ इस देश के संसाधन क्या है जल, जमीन, जंगल, जानवर, जन्तु इसका एक बड़ा व्यापक सर्वेक्षण किया। लगभग 3 लाख गावों में कार्यकर्ता इस अभियान में गये। और कई नये कार्यकर्ता हमसे जुड़ गये। जिनका अन्य बातों से विरोध था, वो भी साथ आये। चन्द्रशेखर जैसे समाजवादी ने भी हमारे अभियान का श्रीगणेश किया और देश के पाँच स्थानों पर हमारे अभियान में भाषण दिया। दिल्ली में स्वदेशी जागरण मंच के प्रेस कार्यक्रम में उनके आने से पूर्व वही पत्रक बाँटा गया जो कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक बालासाहब देवरस के नागपुर में स्वदेशी के कार्यक्रम में बाँटा गया था। उन्होंने स्पष्ट किया कि जो बात बालासाहब बोलना चाहते थे, इस आर्थिक संकट के बारे में, मेरा भी वही मत है, अतः मैंने उन्हीं का प्रेस ब्रीफ जानबूझकर पहले बंटवाया है।

चन्द्रशेखर जी समाजवादी थे, आरएसएस के आलोचक थे, **लेकिन स्वदेशी के मंच पर आये। जार्ज फर्नाडीज़** बहुत बड़े समाजवादी नेता थे, **एस.आर. कुलकर्णी** पोस्ट एण्ड टेलिग्राफ वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष थे, वे भी स्वदेशी के मंच पर आये।

यहाँ तक तो बात रही, लेकिन देश के एक बड़े वामपन्थी पत्रकार, सम्पादक शिरोमणि व विश्वप्रसिद्ध **मार्क्सवादी निखिल चक्रवर्ती सम्पर्क में आये**। वे स्वदेशी के कार्यकर्ताओं को (उनके पोशाक) देखकर भड़क गये, और कहे कि सब आरएसएस वाले हैं। जब एक कार्यकर्ता ने स्वदेशी का पत्रक दिखाया तो उसे वो बड़े ध्यान से देखते रहे और कहा कि लगता है आरएसएस ने नया शिगूफा छोड़ा है। अरे जनसंघ और आरएसएस, पूँजीपतियों और बनियों के पहले से दलाल हैं। और नयी आर्थिक नीतियों के कारण देशी पूँजीपति समाप्त होने वाले हैं, जिन्हे बचाने के लिए ये शिगूफा छोड़ा गया है। ये बातें पत्रक पढ़ने के दौरान निखिल जी कह रहे थे। पत्रक पढ़ते–पढ़ते उनकी नज़र एक जगह अटक गयी और पूछा कि ''क्या प्रचार कर रहे हो, आप लोग? टार्च में, जीप टार्च लेनी चाहिये, एवरेडी नहीं लेनी चाहिये?'' अब निखिल चक्रवर्ती को पता था कि जो जीप वाली टार्च है उसे एक मुसलमान सज्जन बनाते हैं। उन्होंने कार्यकर्ताओं से पूछा – कि तुम्हें पता है कि जीप टार्च कौन बनाता है? तो एक कार्यकर्ता ने कहा कि हैदराबाद के अमन भाई बनाते हैं। ''वो तो मुसलमान हैं, और तुम लोग आरएसएस वाले हो, उसका प्रचार क्यों कर रहे हो?'' तो कार्यकर्ता ने कहा – ''कुछ भी हो, जीप स्वदेशी है, इसलिए हम इसका प्रचार कर रहे हैं।'' इतना सुनकर निखिल चक्रवर्ती का दिमाग फिर गया और जब वे देहरादून से दिल्ली आये तो एक लम्बा कालम लिखा, जिसमें देश के सभी विचारधारा वाले लोगों से आपसी मतभेद भुलाकर, स्वदेशी से जुड़ने का आग्रह किया।

चला अभियान : पहला बड़ा संघर्ष – एनरॉन

एक बड़ा आवश्यक मुद्दा ध्यान में आया 'एनरॉन और एनरॉन (पावर क्षेत्र में मल्टीनेशनल कंपनी)। इस मुद्दे को स्वदेशी जागरण मंच ने 1995 में चलाया। हमने बड़े बौद्धिक दृष्टि से इसका अध्ययन किया एक डॉक्यूमेन्ट बनाया 'एनरॉन देश के हित में नहीं है' हमने ऐसी कोरी नारे–बाजी नहीं की।

> *''स्वदेशी का मतलब है, देश को आत्मनिर्भर बनाने की प्रबल भावना। राष्ट्र की सार्वभौमिकता और स्वतंत्रता की रक्षा की भावना तथा सामनता के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का स्वीकार। स्वदेशी की अवधारणा माने देश भक्ति का अविष्कार है। किंतु इतना बोलने से प्रकट नहीं होता। राष्ट्रीय जीवन, व्यक्तिगत जीवन के सभी कार्यों में स्वदेशी का दर्शन होना चाहिए।''* – **(दत्तोपंत ठेंगड़ी)**

बड़ा अध्ययन करते हुए, काम करते हुए, हमने डॉक्यूमेन्ट बनाया, लाया और उस आन्दोलन को हमने जमीन पर नेतृत्व देना शुरू किया। रत्नागिरि जिले में, जहां लड़ाई जमीनी स्तर पर हो रही थी और महाराष्ट्र में सरकार के विरोध में शरद पंवार की सरकार के विरोध में, एनरॉन को केन्द्र बिन्दु बनाकर, एक जबरदस्त जन–आन्दोलन हमने प्रदेश भर में चलाया, जिसका नेतृत्व स्वदेशी जागरण मंच ने किया, बहुत सारे लोग सहयोगी थे, समाजवादी और सर्वोदयीवादी। सारे लोग जुड़े लेकिन आन्दोलन को एक–एक कदम आगे बढ़ाने का काम स्वदेशी जागरण मंच ने ही किया। यानि नेतृत्व करने का कार्य मंच ने किया। उस समय 'फास्ट ट्रैक प्रोजेक्टस' जो इलेक्ट्रीसिटी के लिए, कोई सात–आठ की संख्या में प्रोजेक्ट्स चल रहे थे, जिसमें एनरॉन एक था। उधर 'कॉजेस्ट्रिक्स' कर्नाटक में आ रही थी। इस प्रकार की कई कम्पनियों को लाने का एग्रीमेन्ट आंध्र प्रदेश में भी हुआ था, तो **एनरॉन को हम लोगों ने जैसे ही लड़ाई का मुद्दा बनाया, तो अन्य विदेशी कंपनियों के विदेशी निवेश की रफ्तार धीमी हो गयी,** कि जरा सावधानी से देखा जाए। देश और समाज, इस पर क्या संकेत देता है, इसको समझा जाए। उसके बाद निवेश करना या नहीं करना, देखेंगे, ऐसा निवेशकों को लगा।

धीरे–धीरे रफ्तार बिलकुल बन्द हो गयी। तो पूरे देश के वैश्वीकरण के विरोध में, स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाने वाला समाज का यह आन्दोलन हुआ। जिसका नेतृत्व हमने किया, लेकिन लड़ाई समाज ने लड़ी। समाज ने जो लड़ाई लड़ी वह कोई साधारण लड़ाई नहीं थी। बाद में नन्दीग्राम (बंगाल) की लड़ाई आम आदमी ने लड़ी। मामूली बात नहीं है, कि जमीन की कीमत पांच लाख, दस लाख प्रति एकड़ तय कर दे, फिर भी किसानों का यह कहना कि हमें नहीं चाहिए। रत्नागिरी के किसानों ने 'हमें नहीं चाहिए' कह कर यह लड़ाई लड़ी और हमने नेतृत्व किया। और कुल मिलाकर इस लड़ाई को वैश्वीकरण के विरोध में लड़ा गया। एनरॉन आन्दोलन, एक सफल शुरूआत था।

आन्दोलन को चलाने में, उठाने में, नेतृत्व देने में, लोगों को उस पर चर्चा में खींचने में, हम सफल हुए। इसकी घोषणा हमने कलकत्ता अधिवेशन में किया कि हम इसको पकड़ेंगे और इस पर हम लड़ेगे, फिर इस पर हम निर्णायात्मक लड़ाई लड़ेगे, हम इस पर आगे बढ़ेंगे। इस लड़ाई की भी कहानी है अब इस कहानी का प्रत्यक्ष रूप सामने आया, कि इस लड़ाई के 'ग्रे' एरिया भी है, कि जिन राजनेताओं के सहयोग से हम इस लड़ाई में आगे

बढ़े, उनकी सरकार आने के बाद, उन्होंने एनरॉन के साथ समझौता किया।

13 दिन की राजग सरकार, और उसमें एक केबिनेट मीटिंग हुई। उसमें एक निर्णय हुआ। अल्पमत की सरकार, जो संसद में विश्वासमत का प्रस्ताव हार गई, लेकिन एनरॉन के समझौते पर केन्द्र सरकार ने अनुमति दे दी। तो इससे जन आन्दोलन को जबरदस्त धक्का लगा, लेकिन भगवान सच्चाई के पक्ष में रहते हैं। सच्चाई की जीत हमेशा होती है। सच्चाई की जीत को कोई रोक भी नहीं सकता। इसलिए, एनरॉन के जितने पहलू थे, उसकी कीमतों की दृष्टि से, उसके आधारिक संरचना की दृष्टि से, कम्पनी के प्रोफाइल की दृष्टि से, उस कम्पनी के अभी तक के कार्यों संबंधित जितने भी मुद्दे थे वह सबकी दृष्टि से, वह सब जिसने भी उठाने की कोशिश की, उसको उठाने के लिए, अपने पाले से पाला–बदल कर के कोशिश किया। लेकिन अन्त में हुआ यह कि, 'एनरॉन, हम तो डूबेंगे सनम, तुमको भी ले डूबेंगे', के अन्दाज में यानि **जिन लोगों ने एनरॉन को समर्थन दिया, उनके मुंह पर तमाचा लगाते हुए, डूब गया।** साथ ही हमारे आन्दोलन में उतार–चढ़ाव आते रहे, हमारे लिए दिक्कतें भी रही। हमारे लिए चुनौतियाँ भी रही, लेकिन हमारे चरित्र, लड़ाई के प्रति हमारी प्रतिबद्धता, जनहित और राष्ट्रहित से जुड़े मुद्दों के प्रति निष्ठों, स्वदेशी नेतृत्व में लोगों में विश्वास भी पैदा हुआ।

हमारी कमजोरियाँ भी सामने आई होगी। लेकिन 'ये लोग अपने–पराये के लिए नहीं, राष्ट्रहित के लिए लड़ेंगे' यह भी इसी संघर्ष ने स्थापित कर दिया। तो हमने इसे कलकत्ता अधिवेशन (1995) से प्रारम्भ किया। मूर्तिमान मुद्दो पर आन्दोलनों की घोषणा कलकत्ता सम्मेलन में की गई। आखिर दूर रहने वाले मुद्दों के बारे में केवल जागरण से नहीं चलेगा, कुछ मुद्दों को पकड़ कर, वैश्वीकरण के विरूद्ध लड़ाई को लड़ना है, इस घोषणा के बाद इस संघर्ष को आगे बढ़ाया।

पशुधन संरक्षण आंदोलन

कलकत्ता में हमने घोषणा की, –'पशुधन संरक्षण'। विकास और खेती के संकट को हमने उसी समय भांपते हुए कहा कि मानव पशुधन का जो अनुपात है, वह बहुत घटता जा रहा है, और अधिक यांत्रिक कत्लखानों को खोलनें के प्रयास सरकारों की ओर से हो रहे है। इतने कीमती पशुधन को, चाहे वह गाय है, या बैल है, या सांड है, जो केवल घास अथवा कृषि–अवशेष खाकर पूरे देश को दूध, दही, मक्खन और कृषि के लिए अनन्त मात्रा में खाद तथा बैल जुटाने वाले कीमती पशुधन को आप बड़े सस्ते दामों में बेचते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में, पशु को काट के कारखानों में, उसको पैक करके मध्य एशिया (मिडिल ईस्ट) में निर्यात करना, क्यों? निर्यात केंद्रित अर्थव्यवस्था, निर्यात केंद्रित विकास, किसी भी कीमत पर निर्यात को बढाना, यह जो चल रहा है, **अगर ऐसा ही चलता रहा तो भारत के किसान और भारत की कृषि पर संकट खड़ा होगा।**

यह कोई साधारण पशु बचाने वाली बात नहीं है। इसलिए 'अल–कबीर' जो आन्ध्र में यांत्रिक कत्लखाना खोला गया था, उसके विरोध में स्वदेशी जागरण मंच की ओर से, तत्कालीन अखिल भारतीय संगठक मुरलीधर राव ने सेवाग्राम (वर्धा) से अल–कबीर (आंध्र प्रदेश) तक की पदयात्रा की। 7.5 किमी. की पदयात्रा में अपार जन समर्थन मिला। एक माह की पदयात्रा का समापन एक जनसथा में किया गया। जिसमें विभिन्न पार्टियों के नेताओं के साथ–साथ लगभग 12 हजार लोग रूद्रारम या मेड़क जिले एकत्रित हुए। इसी जनसभा से निकलते समय आंदोलन के नेतृत्व कर्ता श्री मुरलीधर राव ने अपनी गिरफ्तारी दी। **स्वदेशी केवल जागरण, चर्चा और संगोष्ठी के लिए नहीं, 'सड़क पर लड़ेंगे',** इस प्रकार के आयाम देने का काम हमने 'पशुधन संरक्षण यात्रा' से किया।

कलकत्ता सम्मेलन में देखा जाए तो, रैली निकालने में नारे देने वाले कार्यकर्ताओं की संख्या भी हमारे पास पर्याप्त नहीं थी। अनुभव नहीं था, मंच पर भाषण देने वाले लोगों की संख्या भी पर्याप्त नहीं थी, लेकिन समाज में ताकत है। जब समाज के मुद्दों पर लड़ेंगे तो समाज आपके साथ आयेगा और जो–जो आप में कमियां है, उसे दूर कर देगा। महत्वपूर्ण निर्णय जो स्वदेशी जागरण मंच ने वहां लिया वह है **'सागर यात्रा'। वह बड़ी ऐतिहासिक यात्रा है।** मुझे लगता है कि देश में कभी गत सैकड़ों वर्षों के इतिहास में ऐसा नहीं हुआ होगा कि सम्पूर्ण सागर की यात्रा की गई हो। इस यात्रा में नाव में बैठकर हर तट पर, हर गांव में सभा करते हुए नाव को आगे बढ़ाते जाना, और यात्रा करना।

सागर में संघर्ष

क्या हुआ कि मछुआरे विवश हो रहे थे ? वैश्वीकरण के संकट से उत्पन्न बेरोजगारी के कारण परेशान हो रहे थे। क्योंकि सरकार, समुद्र की गहराई में मछली पकड़ने का काम, विदेशी कम्पनियों को, जो यांत्रिक पद्धति से मछली पकड़ने वाली एवं 'मेकेनाइज्ड फिशिंग' करने वाली कम्पनियों को लाईसेन्स दे चुकी थी। अन्धाधुन्ध रूप से, हर तरफ, अनाप–शनाप, भारी

मात्रा में मछली पकड़ना और इस प्रक्रिया में जो मछलियाँ और समुद्री जीव मर जाते उनको समुद्र तटों पर फेंकना, इस तरह प्रदुषण, बेरोजगारी और अस्तित्व का संकट था। तो हमारे पास मछुआरों में कार्यकर्ताओं की बड़ी टोली या नेटवर्क नही था। कोई संगठन भी साथ नहीं था। कोई इकाईयाँ भी नहीं था। स्वदेशी जागरण मंच ने तय किया कि यह देश का मुद्दा है, इसके लिए लड़ना है। तो कल्पना कीजिए कि एक तरफ दो हजार, एक तरफ तीन हजार किलो मीटर की समुद्र यात्रा करते हुए, त्रिवेन्द्रम में हमने अन्तिम कार्यक्रम किया। फादर थामस कोचरी के नेतृत्व में पहले से चल रहे आंदोलन को श्री सरोज मित्रा एवं लालजी भाई ने नई दिशा प्रदान की और हम देश की लड़ाई के नाते, इसे उभारने में सफल हुए। बड़ा विचित्र, कई बार आपको लगता है। अल–कबीर का आन्दोलन करते समय जो जैन–समाज के लोग हमारा समर्थन कर रहे थे वहीं मछुवारों की लड़ाई में हमारा विरोध कर रहे थे। वो कहते थे, आप मछुआरों की लड़ाई क्यों लड़ रहे हो, वे मांसाहारी हैं। लेकिन हमने उन्हें समझाया कि यह शाकाहारी या मांसाहारी का विषय नहीं है। **'राष्ट्रहित के नाते हमने इस लड़ाई को लिया' और अन्त में उसमें हमने सफलता प्राप्त की।**

मुरारी कमेटी की रिपोर्ट पर सरकार को विवश होकर बड़े विदेशी ट्राले के अनुबंध को रद्द करना पड़ा। क्योंकि पूरे समुद्र तट पर मछुआरों का जो समाज है वह संगठित हो गया। उसमें इसाई, मुसलमान सब साथ आ गये। स्वदेशी जागरण मंच इन सबको साथ ले चलने में सफल हुआ। हमने अलग से अपना नेतृत्व चलाने का कभी प्रयत्न नहीं किया तो भी हम इसमें सफल हुए। इस प्रकार से, जिसको मुद्दों के माध्यम से वैश्वीकरण के विरोध में लड़ाई को खडा करना कहते है। हमने इन विषयों को आगे बढाना शुरू किया।

फिर बाद में अभियान पर अभियान हम लेते गये। फिर **बीड़ी वालों के लिए भी हमने अभियान लिया**। हम सब जानते है कि बीड़ी बनाने

> *''स्वदेशी यह भावना है, केवल आर्थिक बात नहीं है। और इस भावना के आधार पर ही स्वदेश ऊपर जा सकता है। देश प्रेम की साकार और व्यवहारिक अभिव्यक्ति है स्वदेशी। देश प्रेम का अर्थ दुनिया से अलग–थलग रहना नहीं है। खासकर हमारी परंपरा में, जो वसुधैवकुटुम्बकम् के आधार पर टिकी है। इसके मुताबिक, मानवीय चेतना के स्तर पर अंतर्राष्ट्रीयता, राष्ट्रवाद का ही विस्तार है।''* – **(दत्तोपंत ठेंगड़ी)**

वाले लोग मध्यप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, आदि प्रांतों में हैं। इन प्रान्तों में तेंदुपत्ता से बीड़ी बनाते हुए अनेकों महिलाओं को रोजगार मिला हुआ है। आई.टी.सी. जैसी बड़ी कम्पनियों को 'मिनी सिगरेट' के लिए परमिशन मिल गया, तो उनके साथ कम्पीटिशन होता। तो ऐसे में, हमने कहा कि यह नहीं चलेगा। इतने सारे रोजगार समाप्त करके कैसे चल सकता है? इसके लिए हमने '**बीड़ी रोजगार रक्षा आन्दोलन' चलाना शुरू किया** और इसके लिए समन्वित प्रयास हमने प्रारम्भ किये और ये प्रयास भी सफल हुए। सारे आन्दोलनों में हम सफल हुए। बीड़ी रोजगार बचाने में हम सफल हुए। इस प्रकार से, मुद्दों को उठाते हुए, आन्दोलन चलाने का काम किया, और हम आगे बढ़ते गये।

जनसंचार (मीडिया) को विदेशियों के हाथों में पड़ने से बचाया

इसी क्रम में मीडिया में विदेशी निवेश की बात चली। आप जानते है 1955 के केबिनेट डिसिजन के बारे में। उपनिवेशवाद के बाद भारत की केबिनेट ने यह तय किया था कि 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार (राइट टू इन्फोर्मेशन)' जो है वह केवल नागरिकों के लिए है। इसलिए अखबार जो है वह जन–जागरूकता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार के तहत आता है, इसलिए विदेशी नागरिकों के लिए इस देश में अखबार चलाने का अधिकार नहीं रहेगा। ऐसा उन्होंने तय किया था, अब उसको बदलने के बड़े प्रयास हुए, तो इसके विरोध में लड़ाई को हमने आगे बढ़ाया। लड़ाई चलती रही। कहीं हारे कहीं जीते और अंत में, 26 प्रतिशत प्रिन्ट मीडिया में विदेशी निवेश आया। लेकिन उसका लाभ यह हुआ, कि बाद में मीडिया यानि केवल प्रिन्ट मीडिया नहीं है, तो फिर अन्त में स्टार चैनल भी स्वदेशी हो गया, सारे विदेशी चैनल स्वदेशी हो गये। क्योंकि टोटल ग्रोस मीडिया जो भी है, उसमें 26 प्रतिशत से ज्यादा मीडिया में विदेशी निवेश नहीं हो सकता। इस लड़ाई को लड़ते रहने के कारण, लगातार दबाव बढ़ाने के कारण, हम अपना पूरा मीडिया जो आज है, जो पचासों चैनल आप देखते है, न्यूज का, हर स्टेट का दो–तीन चैनल्स है (उड़िया का भी चैनल्स है, तमिल का भी चैनल्स है, तेलगू का भी चैनल्स है, जितने भी चैनल्स है), पूरी तरह हमारे देश के लोगों के हाथों में है। इसका व्यापार हमारे देश के लोगों के हाथों में है। सूचना तंत्र भी हमारे देश के लोगों के हाथों में है। इसके अनुभव भी हमारे देश के लोगों के हाथों में हैं, तो इसी बलबूते वैश्विक स्तर की क्षमताओं को हमने अपने यहां विकसित किया।

दूरसंचार (टेलिकम्यूनिकेशन) भी बची

उसी प्रकार टेलिकम्यूनिकेशन के विषय में हमारी लड़ाई चलती रही। अगर सरकार की मर्जी चलती, अगर सरकार का वश चलता तो 100 प्रतिशत विदेशी कम्पनियों को अनुमति होती। वे तो शुरू ही 100 प्रतिशत से करते। लेकिन हमने कहा कि टेलिकम्यूनिकेशन में जो रिवोल्यूशन आ रहा है, उसका लाभ देशी उद्योगों को, छोटे उद्योगों को चलाने वालों को भी मिलना चाहिए।

कल्पना कीजिए कि अगर वोडाफोन जैसी विदेशी कम्पनियां पहले आ जातीं, तो जैसी स्थिति हम रेनबेक्सी के सम्बन्ध में सुन रहे है, जैसी स्थिति हम पेप्सी और कोका कोला की देख रहे है, वैसी स्थिति हम टेलिकम्यूनिकेशन में भी देखते। तो **हमारी लड़ाई के कारण आज आप देखते है कि भारतीय उद्यमी** चाहे वह एयरटेल हो, श्याम टेलिलिंक हो, आइडिया हो, रिलायंस हो, टाटा हो (सब इण्डियन कम्पनीज़ हैं), **भारतीय पहचान के नाते जम गये** और बी.एस.एन.एल. की कहानी तो और है। तो इस प्रकार टेलिकम्यूनिकेशन को देशी हितों के लिए बचाना, बीमा को देशी हितों के लिए बचाना, बीड़ी के विषय में आगे बढ़ाना और जितने मुद्दे हैं, सब हमने लड़े। उन सब पर हम लड़ते गये, लगातार संघर्ष करते गये। चेतना यात्रा, संघर्ष यात्रा और मुद्दों को लेकर आन्दोलन, महाधरना, यह सब हम करते गये। ये सब, आन्तरिक वैश्वीकरण के जितने प्रयास है, ये उनके विरोध में है। एक और महत्व के मुद्दे अर्थात् भारतीय रूपये की पूर्ण परिवर्तनीयता के बारे में आज भी लगातार हमारी लड़ाई जारी है, जिसको वित्तीय भूमंडलीकरण (फाइनेन्शियल ग्लोब्लाइजेशन) कहते है, के लिए रूपये की पूर्ण परिवर्तनीयता करना आवश्यक है। जिसके विरोध में स्वदेशी जागरण मंच लगातार संघर्ष कर रहा है।

चार्टर्ड एकाउंटेन्ट्स की सेवाओं (सर्विसेज) के भूमंडलीकरण (ग्लोब्लाइजेशन) के विषय में हमने लड़ाई शुरू की। हमने कन्वेंशन्स किये, दिल्ली में, मुम्बई में, बैंगलूर में, चैन्नई में, हजारो–हजारों चार्टर्ड एकाउंटेन्ट्स के हमने कन्वेंशन्स किया, हमारे देश के सी.ए. क्या चाहते है? 'लेवल प्लेइंग फील्ड' (बराबरी) चाहते है। तो इस प्रकार से वकीलों के विषय में भूमंडलीकरण नहीं चल सकता। हमारे वकीलों को पहले बराबरी पर लाओ, इसलिए हमने वहां सर्विस सेक्टर की लड़ाई शुरू की, उनके साथ मिलकर लड़ाई चलाई। ऐसे बहुत से मुद्दे हैं। इन मुद्दों को हम एक के बाद

एक लड़ते गए। गिनती करते जायेंगे तो इसमें और दस मुद्दें जुड़ेंगे। तो हम इस लड़ाई में आगे बढे।

एक आंतरिक लड़ाई – विनिवेश की

इस लड़ाई का एक और पहलू है, वह है सरकारी कंपनियों का 'विनिवेश' (डिसइन्वेस्टमेन्ट)। डिसइन्वेस्टमेन्ट चाहे नरसिंह राव की सरकार में, मारूति के सन्दर्भ में, कांग्रेस की सरकार के विरोध में, एन.डी.ए. सरकार के विरोध में, और सारी सरकारों के विरोध में डिसइन्वेस्टमेन्ट का मुद्दा, सैद्धान्तिक पक्ष की बात नहीं है, कि पब्लिक सेक्टर में मोर्डन ब्रेड को हमें चलाना चाहिए या नहीं चलाना चाहिए, मैं इसमें नहीं जाता हूँ, लेकिन, हमारे देश की इतनी बड़ी संपत्ति है, जमीन है, इतना बड़ा ब्राण्ड है, उसको आप औने–पौने दाम पर बेचकर, पूंजीपतियों को दान कर रहे है। कई जगह एकाधिकार स्थापित करने के लिए, मोनोपोली लाने के लिए, जैसे पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स का जो ट्रेड है, उसमें रिलायंस का एकाधिकार स्थापित करने का काम, एन.डी.ए. सरकार के जमाने में हुआ। पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स के ट्रेड में जो कम्पनी है, उनका डिसइन्वेस्टमेन्ट कर दिया, और उसके रहते हुए आज पूरे पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स की, पूरे देश में उसका एकाधिकार है। रिलायन्स के एकाधिकार के समर्थन में, बड़े अजूबे ढंग से तर्क दिया गया, उस समय के मंत्रालय चलाने वाले लोगों ने। तो हमने विरोध किया। हम तर्कों को सामने लाएं, हमने पूरे देश में डिबेट छेड़ दिया। **इस बहस का अगर कोई केन्द्र था तो वह स्वदेशी जागरण मंच था।**

भारत पेट्रोलियम व हिन्दुस्तान पेट्रोलियम इन दोनो को या इनमें से किसी एक को बेचना चाहते थे और इसको विदेशी 'शैल कम्पनी' या रिलायंस कम्पनी दोनों लेना चाहती थी यानि एक दम धंधा बेचने के जैसा। जिसमें फायदा किसी और को, देश को घाटा ही घाटा। जहां आप बेच भी सकते है ऐसे क्षेत्रों में, जहां सिद्धान्त रूप में विरोध नहीं है वहां भी, जैसे 31 करोड़ में होटल बेचा गया, सिद्धान्ततः होटल के विनिवेश के हम विरोध में नहीं है लेकिन देश की सम्पतियों को जिस प्रकार की पद्धतियों से बेचा गया, उसके कारण विनिवेश लगातार हमारी लड़ाई का एक मुद्दा रहा।

बी.एस.एन.एल. को कमजोर करना चाहते थे, डिसइन्वेस्टमेन्ट करना चाहते थे, तो हमने कहा कि इसको कमजोर करोगे, तो टेलिकोम मार्केट का अभी जो प्रतिस्पर्द्धा चल रहा है, उसमें ग्राहक के हित में भी सोचना चाहिए। इस प्रकार से प्रतिस्पर्द्धा को बनाए रखना सम्भव नहीं है। इसलिए प्रतिस्पर्द्धा

में बनाए रखने के लिए भी एक कम्पनी रहनी चाहिए। इस दृष्टि से हमने तर्कों को आगे बढ़ाते हुए, राष्ट्रहित को मजबूत रखने के लिए जो आवश्यक है वह किया। विनिवेश हमारे लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है और हम लड़ते रहे हैं।

नमक पर भी संकट

नमक के विषय में, **आयोडिन नमक**! जहां नमक के विषय को लेकर पूज्य महात्मा गांधी ने लाखों लोगों को साथ लेते हुए आन्दोलन किया। दांडी मार्च किया। उस 'दांडी मार्च' की शताब्दी समारोह मनाकर सत्ता में आये लोग, सत्ता का सुख भोग रहे लोग, दांडी मार्च इतिहास को भुलाना चाहते है। कहीं गण्डमाला (गॉयटर) हो रहा है, इस नाम पर कम्पनियों को नमक की कीमतों को अनाप–शनाप बढ़ाने का एकाधिकार दे दिया जाता है। **आयोडिन नमक के नाम पर कुछ बड़ी कम्पनियों को नमक के क्षेत्र में एकाधिकार हो गया। आयोडिन नमक की अनिवार्यता का विरोध करते हुए हमने कहा कि आयोडिन नमक के नाम पर बड़ी कम्पनियां अनाप–शनाप मुनाफाखोरी करके लोगों का शोषण कर रही है।**

जिस तरह से आयोडिन नमक के साथ, दिया जा रहा है, उस तरह से यह भारत में चल ही नही सकता। जिस तरह से हम सब्जियों में नमक मिलाते है, उससे आयोडिन का मतलब ही नहीं रहता। ऐसे बहुत सारे तर्को को हम सामने लाये। डॉक्टर्स, विशेषज्ञों (एक्सपर्ट्स) को हमने साथ लिया, लड़ाई आगे बढ़ाई और फिर हमने 'दांडी मार्च' की घोषणा करते हुए कहा कि या तो आप रहेंगे या हम रहेंगे। कार्यक्रम पर कार्यक्रम चलेंगे और एक

> *'आजादी के आंदोलन के समय कलकत्ता के देशभक्त, शाम के समय एक रेस्तरां में रोजाना एकत्र होते थे। वहां चायपान होता था। तो उस समय 'ब्रिटिश पुडींग' नाम का आहार सभी का मनपंसद होता था। परन्तु एक दिन उन्होंने रेस्तरां के मालिक को कहा कि अब हम विदेशी 'ब्रिटिश पुडींग' नहीं खायेंगे। चाहे कितना भी पंसद आता होगा। कोई देशी व्यंजन ही खायेंगे। तो उस रेस्तरां मालिक ने छेने से पहली बार 1865–66 में रसगुल्ला बनाया और वह रसगुल्ला सर्वमान्य हो गया। उसके बाद छेने की ओर चीजें भी बनने लगी, जो आज विश्व प्रसिद्ध हो गयी हैं। इसका नाम स्वदेशी है। हर चीज में स्वदेशी, खाने में स्वदेशी, बोलने में स्वदेशी, व्यवहार में स्वदेशी।''* – **(दत्तोपंत ठेंगड़ी)**

बार जनता के कार्यक्रम चलेंगे तो आपके नियन्त्रण में नहीं रहेंगे। जब आन्दोलन शुरू हुआ तो फिर **सरकार ने निर्णय लिया कि आयोडिन नमक के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा,** अनिवार्यता समाप्त करते है।

बाद में फिर सरकार बदली, दूसरी सरकार आयी, तो फिर इस विषय को आगे क्यों बढ़ाया ? क्योंकि कॉर्पोरेट इन्ट्रेस्ट जो है, लगातार इसको आगे बढ़ाने में अपनी पूरी ताकत लगाते हैं, तो हम कई मुद्दों पर लड़ते है, आंशिक सफलता प्राप्त करते है, कई मुद्दों पर सफलता प्राप्त करते है, कई मुद्दों पर गति को रोकने में हमें सफलता मिली, तो इस प्रकार से आयोडिन नमक के विषय पर हमने लड़ाई लड़ी। यह लडाई हम कोर्ट में भी लड़ रहे हैं।

बौद्धिक लड़ाई

ये सारे एक अध्याय है, एक आयाम है, तो दूसरी तरफ विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू.टी.ओ.) की नीतियों के खिलाफ देश में बौद्धिक जागरूकता का कार्य भी करना होता है। इस देश में बौद्धिक सम्पदा (इण्टेलेक्चुअल प्रोपर्टी) अधिकार विषय पर सारे पक्षों को एक मंच देने का कार्य स्वदेशी जागरण मंच ने किया। इस लड़ाई को कभी कोई लिखेंगे तो इसे स्वर्ण अक्षरों से लिखना पड़ेगा, यह एक स्वर्णिम अध्याय है, कि बालकृष्ण केला जी ने एक अकेले, पहल करते हुए, चार–पांच लोगों को साथ लेकर लड़ाई लड़ी। हमेशा हर विषय पर बौद्धिक दृष्टि से, सब सांसदों को, सभी संगठनों को, सभी आन्दोलनों को दिशा देना कोई शुल्क लिए बगैर, बैंगलोर जाना है, मुम्बई में समझाना है, हैदराबाद में कार्यक्रम में जाना है, साहित्य देना है, हजारों की संख्या में पुस्तकों को बांटना, यह काम वो करते रहे, और इन सभी कार्यों को करने में हम साथ रहे। जन–जागरण में हमने अग्रिम भूमिका निभायी। **हमसे ज्यादा किसी ने भी देश में विश्व व्यापार संगठन के खिलाफ बड़े कार्यक्रम नहीं किये।** अनेक लोगों ने किये, कई संगठनों ने किये, हम उनके खिलाफ नहीं है, हम उनके साथ है, हमारा समन्वय है, लेकिन किसी एक आन्दोलन ने, इसे लगातार चलाया और जनता में एक जन–दबाव उत्पन्न करने का प्रयास किया, वह स्वदेशी जागरण मंच ने किया।

इसमें बहुत अध्याय है, बौद्धिक सम्पदा अधिकार हो, सिंगापुर मुद्दे हो, दोहा विकास हो, या सियाटेल और कॉनकुन सम्मेलन के फेल्योर हो, *'नो निगोशियेशन्स, वी वॉन्ट रिव्यु ऑफ डब्ल्यू.टी.ओ.' 'नो न्यू निगोशियेशन्स ऑनली ऑल्ड कण्डीशन हेव टू बी फुलफिल्ड'*। इस प्रकार से मुद्दों को समय–समय पर आगे बढ़ाते गये। डब्ल्यू.टी.ओ. अन्तर्विरोधों के कारण रूक

गया, उसकी गति मन्द पड़ गई, उसमें हमारी भूमिका भारत के सन्दर्भ में कम नहीं है।

इसमें भी हमने कोई संकुचित दायरे में नहीं देखा, हम लड़ाई का नेतृत्व करते गये, लेकिन हमने सबको साथ लिया। अगर कोई और आगे बढ़ रहा है, तो उसका हमने साथ दिया। 'फोरम ऑफ पारलियामेन्ट्रेरियन' कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। इसको भी बनाने में हमने साथ दिया और 'वर्किंग ग्रुप ऑन पब्लिक सेक्टर युनिट' के निर्माण में साथ रहे। जो भी लड़ रहे थे वे चाहे कम्यूनिज्म से प्रेरित हो, राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रेरित हो या अन्य किसी विचार से प्रेरित हो, **सभी के साथ मिलकर समन्वय करते हुए, इन सारे डब्ल्यू.टी.ओ. मुद्दों को हमने आगे बढ़ाया।** विश्व व्यापार संगठन की बैठकों में धीरे–धीरे हमने अपने प्रतिनिधियों को भी भेजना शुरू किया। कॉनकुन, हांगकांग, जेनेवा, बाली मिनिस्ट्रीयल मीटिंग में स्वदेशी जागरण मंच के प्रतिनिधि गये। इस प्रकार स्वदेशी जागरण मंच ने 20 वर्षों के अन्दर अनेकों आंदोलनों की एक श्रृंखला की। अगर आप संगठन की क्षमता और सम्भावना देखेंगे तो अभी भी आपको संदेह हो सकता है, लेकिन हमारी ताकत क्या है? क्यों यह सब कर पाये? मुद्दों में जो ताकत होती है उसके कारण, मुद्दे उठाकर हम आगे बढे, तो समाज ने साथ दिया। मछुआरों का विषय हो, पशुधन का विषय हो, डब्ल्यू.टी.ओ. का विषय हो या और अन्य विषय हो, इन सभी विषयों में सम्पूर्ण समाज स्वदेशी जागरण मंच के साथ खड़ा रहा तथा अन्य वैश्विक संगठनों का भी साथ लिया गया।

खुदरा व्यापार में विदेशी निवेश : कभी स्वीकार नहीं

डब्ल्यू.टी.ओ. के विषय पर हमने रामलीला मैदान पर अनेकों कार्यक्रम किये। उसी प्रकार एक अन्य मुद्दा आया – खुदरा व्यापार (रिटेल ट्रेड)। रिटेल ट्रेड का मुद्दा आज का नहीं है। यह बहुत पुराना मुद्दा है। मनमोहन सिंह की सरकार के समय 'रिटेल ट्रेड' मुद्दा था और चिदम्बरम उसको आगे बढ़ाना चाहते थे। इसके विरोध में उसी समय से हमारे कार्यक्रम शुरू हुए। महाराष्ट्र में जो 'फेहमा' संगठन है, उस संगठन के साथ मिलकर हमने समन्वय किया और उनको आगे बढ़ाया। हम सबसे मिलते गये, और बाद में मनमोहन सिंह भी विपक्ष में आये, तो रिटेल ट्रेड के आन्दोलन को सहयोग मिला। बाद में फिर दुबारा सरकार में आये तो फिर सरकार के रूख को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। खुदरा व्यापार में विदेशी निवेश के खतरे छोटे, फुटकर व्यापारियों पर है। इस विषय पर हमने विभिन्न स्थानों पर अनेकों

सम्मेलन किये।

खुदरा व्यापार के आन्दोलन को **अखिल भारतीय स्तर पर उठाने वाला और चलाने वाला, गैर–खुदरा व्यापारियों का संगठन अगर कोई है, तो वह स्वदेशी जागरण मंच है।** गत 15–16 वर्षों से, आज जो आप देख रहें है, वह सब स्वदेशी जागरण मंच की आन्दोलनों में सक्रियता का फल है। स्वदेशी जागरण मंच के नेतृत्व में 25 जुलाई 2005 को अखिल भारतीय खुदरा व्यापार सम्मेलन दिल्ली के कांस्टीटयूशन क्लब में किया गया।

देश मे पहली स्वतन्त्रता का प्रतीक थी–खादी और अब दूसरी स्वतन्त्रता का प्रतीक बनेगा जैविक खाद। देवघर अधिवेशन में हमने नया नारा दिया – ''तब खादी, अब खाद''। विकास का ढ़ाँचा भारतीय चिन्तन के आधार पर कैसा होना चाहिए? केवल वस्तु तक सीमित ना रहकर, इन विचारों को आन्दोलन रूप देना जरूरी है। विकास की भारतीय अवधारणा को लेकर स्वदेशी जागरण मंच आगे बढ़ रहा है। पूरी दुनिया में स्वदेशी आन्दोलन को मान्यता मिल चुकी है। स्वदेशी का आन्दोलन दुनिया का आधुनिकतम आन्दोलन है। अमेरिका सहित कई देशों में स्वदेशी का आन्दोलन चल रहा है। अमेरिकी संसद में ''बी अमेरिकन, बॉय अमेरिकन'' का प्रस्ताव लाया गया है। स्वदेशी का विचार अर्थशास्त्र का आधुनिकतम विचार है। स्वदेशी का आन्दोलन आज अभिनन्दन का विषय बन गया है।

'सीमा की रक्षा–बाजार की सुरक्षा' अभियान – पिछले कुछ वर्षों से चीन भारत के लिए एक बड़ी चुनौती बन कर उभरा है। जहां भारत का रक्षा बजट 37 अरब डॉलर है तो चीन का 131 अरब डालर। जहां भारत 13 अरब डालर का निर्यात (ज्यादातर कच्चा माल) चीन को करता है वहीं 54 अरब डालर का तैयार माल आयात करता है। साथ ही चीन ने एक लाख साईबर हैकर्स की सेना भी नियुक्त कर रखी है।

मंच ने देश का ध्यान चीन से संकट की ओर खीचने के लिए व्यापक अभियान चलाने का निर्णय किया। इस अभियान में मोटे तौर से तीन प्रकार की चुनौतियों को केन्द्र बिन्दु बनाया गया एवं तथ्यपरक जानकारी जनता तक पहुंचाई गई–

1. सीमा एवं सैन्य चुनौती
2. लघु उद्योग/व्यापार सहित आर्थिक चुनौती
3. दूरसंचार, सूचना प्रौद्योगिकी सहित साईबर चुनौती

इस अभियान में मंच के राष्ट्रीय सह–संयोजक प्रो. भगवती प्रकाश ने गहन अध्ययन के उपरांत 53 पृष्ठ की एक पुस्तक '***चीनी घुसपैठ एवं हमारी सुरक्षा व्यवस्था***' का लेखन किया एवं मंच ने उसका प्रकाशन किया। प्रो. भगवती प्रकाश के नेतृत्व में 39 सदस्यों की टोली को इस अभियान के संचालन का दायित्व दिया गया एवं पूरे देश को 4 जोन में बांट कर अभियान चलाया गया।

दिनांक 1 सितंबर 2013 से 2 अक्टूबर 2013 तक चले इस अभियान में 20 प्रांतों में 4088 स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। (इसमें स्कूल, कॉलेज, पंचायत, नगर, पुतला दहन, पत्रकार वार्ता, रेली, मोटरसाईकिल रेली आदि सम्मिलित हैं।) महाराष्ट्र प्रांत में बडात्या उत्सव में 80 फुट ऊंचा चीन का पुतला दहन किया गया। इसमें लगभग 3 लाख लोगों ने भाग लिया। राजस्थान प्रांत ने इस अभियान हेतु विशेष रूप से वक्ता प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किया, जिसमें 42 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।

इन कार्यक्रमों में चीन से संबंधित 11 लाख हस्त–पत्रक एवं प्रो. भगवती प्रकाश द्वारा लिखित 1,20,000 पुस्तकें (हिन्दी व अन्य प्रांतीय भाषाओं) वितरित की गई एवं समाज के अनेक संगठनों का सहयोग प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हुई। देश के मीडिया/समाचार पत्रों ने प्रमुखता से इन कार्यक्रमों को स्थान दिया। मंच के हजारों कार्यकर्ताओं ने इसमें सक्रिय रूप से योगदान किया।

इस अभियान के फलस्वरूप देश की सरकार, राजनेता, मीडिया, अफसरशाही, सामाजिक संगठन एवं जनता का ध्यान इस संकट की ओर व्यापक स्तर पर आकृष्ट हुआ तथा आज बच्चे–बच्चे की जुबान पर चीन के संबंध में चर्चा की जा रही है।

❑❑❑

स्वदेशी जागरण मंच का संक्षिप्त इतिहास
(तिथि, वर्ष – अनुसार)

प्रारंभ (22 नवंबर 1991) – राष्ट्रऋषि दत्तोपंत ठेंगड़ी ने नागपुर में पांच राष्ट्रीय संगठनों (अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, सहकार भारती, अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत, भारतीय मजूदर संघ एवं भारतीय किसान संघ) की सहायता से स्वदेशी जागरण मंच की स्थापना की। डॉ. एम.जी. बोकरे मंच के पहले राष्ट्रीय संयोजक बने।

प्रथम जनजागरूकता कार्यक्रम (12 जनवरी 1992) – विवेकानन्द जी के जन्मदिवस पर एक 15 दिन का जन जागरूकता अभियान चलाया गया तथा देश भर में 'स्वदेशी–विदेशी' वस्तुओं की सूचि बांटी गई।

प्रथम सार्वजनिक कार्यक्रम–मुंबई (22 नवंबर 1992) – मूल पांच संगठनों के अलावा 9 अन्य संगठन (विद्या भारती, भारतीय शिक्षण मंडल, राष्ट्रीय सेविका समिति, प्रज्ञा भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, स्वदेशी साईंस मूवमेंट, शैक्षिक महासंघ, विश्व हिन्दू परिषद व संस्कार भारती) स्वदेशी जागरण मंच से जुडे। श्रीमति रोजा देशपांडे तथा श्री एस.आर. कुलकर्णी ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन–दिल्ली (4–5 सितंबर 1993) – श्री वी.आर. कृष्णा अय्यर (पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सुप्रीम कोर्ट) ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

डंकल प्रस्तावों के खिलाफ तैयारी (15 नंवबर 1993)–नागपुर में विभिन्न संगठनों की बड़े पैमाने पर डंकल प्रस्तावों के खिलाफ तैयारी हेतु एक बड़ी बैठक की गई।

द्वितीय जनजागरूकता कार्यक्रम (1994) – डंकल प्रस्ताव (1993 में प्रचलित) के प्रभावों के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाया गया। 3 करोड़ पत्रक और पुस्तकें बांटी गई। 1,83,401 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और इस अभियान में भारत के एक तिहाई गांवों में संपर्क किया गया तथा 372 स्वदेशी बिक्री केंद्र खोले गये। इसके अलावा जन, जल, जंगल, और जानवर पर राष्ट्रीय सर्वेक्षण शुरू किया गया।

एनरॉन के खिलाफ संघर्ष (1995) – मुंबई में 'पावर पर एक्शन ग्रुप' 21 अक्टूबर 1995 में प्रारंभ हुआ, अपने अध्ययन में भविष्यवाणी की कि महाराष्ट्र का यह बिजली विभाग दिवालिया होगा। एनरॉन की अधिकारी श्रीमति रेबेका अपने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाई। यह एक ऐतिहासिक संघर्ष रहा।

स्वदेशी पत्रिका शुरू (15 अगस्त 1995) – बिना रूके हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम में प्रकाशित किया जा रहा है तथा अन्य प्रकाशन भी शुरू किये।

द्वितीय राष्ट्रीय सम्मेलन–कलकत्ता (4–5 नवंबर 1995) – 442 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

राष्ट्रीय मवेशी धन आंदोलन (15 नवंबर 1995 से 6 दिंसबर)– यांत्रिक अल कबीर बूचडखाना आंध्र प्रदेश में शुरू हुआ। 600 किमी. की जागरूकता पदयात्रा 22 दिनों में वर्धा, सेवाग्राम (महाराष्ट्र) से रूद्रोरम (आंध्र प्रदेश) तक संपन्न की गई।

मिनी सिगरेट के खिलाफ बीडी मजदूर आंदोलन (7 जून 1996) – बीडी रोजगार कृषक संघ के तहत आंदोलन चला, सरकार से मिनी सिगरेट की अनुमति बंद करवाई।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा गहरे समुद्र में मत्स्य पालन के खिलाफ सागर यात्रा (जल यात्रा) (8 फरवरी 1996) – 12 जनवरी 1996, गुजरात के पोरबंदर से एक नोका में 15 लोगों के साथ श्री लालजी भाई पटेल के नेतृत्व में गहरे समुद्र में बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा भारत महासागर में मछली पकड़ने के विरोध में सागर यात्रा प्रारंभ हुई। इसी प्रकार पूर्वी तट स्थित बंगाल की काकद्वीप से सरोज मित्र के नेतृत्व में एक नोका में सागर यात्रा प्रारंभ हुई। 8 फरवरी को केरल के त्रिवन्तपुरम् में यात्रा समाप्त हुई। समापन सभा को माननीय दत्तोपंत ठेंगड़ी, मुरलीधर राव, वीणु गोपाल, लालजी भाई एवं सरोज मित्र ने संबोधित किया। मछुआरों की बैठक में माननीय सहसादरी उपस्थित रहे। इस आंदोलन के कारण भारत सरकार ने मुरारी कमेटी को इस समस्या समाधान के लिए नियुक्त किया। बाद में इस कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर भारत सरकार ने भारत महासागर में विदेशी कंपनियों को मछली पकड़ने का लाईसेंस रद्द किया। इस आंदोलन के द्वारा मछुआरों प्रभावित हुए थे इसका प्रमाण महीनों बाद कन्याकुमारी में हुई उपचुनावों में बीजेपी का प्रार्थी जीत कर आया।

वाराणसी में तृतीय राष्ट्रीय सम्मेलन (1997)–पहली बार सम्मेलन में "डब्ल्यू.टी.ओ.–छोड़ों" पर प्रस्ताव पारित किया गया। 960 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया तथा UNTCAD के पूर्व निर्देशक श्री भगीरथ लाल दास ने सम्मेलन का उद्घाटन किया।

द्वितीय नमक आंदोलन – अनिवार्य आयोडीन नमक के खिलाफ आंदोलन किया, और जिस कारण स्वास्थ्य मंत्री श्री सी.पी. ठाकुर ने सरकार के प्रस्ताव को अशक्त घोषित कर दिया। यह एक बड़ी सफलता।

विश्व व्यापार संगठन के खिलाफ जागरूकता पर दो यात्राएं – पहली चेतना यात्रा, देश भर में 17 अप्रैल से 2 अक्टूबर 1998 को आयोजित की गई। लेकिन कुछ राज्यों जैसे आंध्र प्रदेश, गुजरात एवं केरल में यह यात्रा 2 अक्टूबर से 10 अक्टूबर 1998 तक रही। दूसरी राज्य स्तर पर संघर्ष यात्रा की गई। विश्व व्यापार संगठन की बैठकों के खिलाफ जागरूकता में ये यात्राएं सफल रही।

बंगलौर में मेट्रो शॉपिंग मॉल के खिलाफ आंदोलन – स्वदेशी जागरण मंच ने बंगलोर में बहुराष्ट्रीय शॉपिंग मॉल "मेट्रो" के खिलाफ आंदोलन किया।

दस्तावेज प्रकाशित (1998) – विभिन्न पहलूओं पर भारत की स्थिति के बारे में एक दस्तावेज प्रकाशित किया गया। जिसे अंग्रेजी में भारत पुनर्निर्माण और हिन्दी में भारत अभ्युदय का नाम दिया गया।

दिल्ली में सबसे बड़ी रैली (25 फरवरी 1999) – कानकुन सम्मेलन से पहले 50,000 श्रमिकों एवं कार्यकर्ताओं तथा भारतीय मजदूर संघ के साथ मिलकर रैली करके एक दबाव बनाया गया। जिसके परिणामस्वरूप कानकुन सम्मेलन विफल हो गया। यह

करने से पहले एक महाधरना (हुंकार सभा) भी रामलीला मैदान में आयोजित किया गया।

बीमा विधेयक के खिलाफ धरना – बीमा विधेयक के खिलाफ दिल्ली में जंतर–मंतर पर 3 दिसंबर 1998 को धरना आयोजित किया गया।

प्रगति मैदान में स्वदेशी मेला (25–30 जनवरी 1999) – 300 से अधिक व्यापारिक घरानों ने इस मेले में भाग लिया एवं प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इसका उद्घाटन किया। उसके बाद अनेक स्वदेशी मेलों का आयोजन किया गया, अब तक लगभग 150 स्वदेशी मेले आयोजित किये जा चुके हैं। इसी प्रकार 6 स्थानों पर माईक्रो–फाइनेंश का भी काम शुरू हुआ।

केरल के प्लाचीमाड़ा में पेप्सी–कोक के खिलाफ आंदोलन युद्ध (मार्च 2004) – प्लाचीमाड़ा में पेप्सी–कोक का प्लांट मार्च 2004 से बंद कर दिया गया। जो अभी तक बंद है। लेकिन मुआवजे की लड़ाई अभी बाकी है।

वृंदावन में स्वदेशी जुटान (19–20 अप्रैल 2008) – देशी राजनीति एवं व्यक्ति आधारित नीतियों (देशी राजनीति और जनोन्मुखी विकास) पर चर्चा के लिए जुटान।

बी.टी. बैंगन एवं अन्य कृषि (13–30 जनवरी 2010) – पर्यावरण मंत्री द्वारा सार्वजनिक सुनवाई के दौरान सात जगहों पर संगठित मुद्दों के खिलाफ आंदोलन। देश भर में ऐसे अनेकों कार्यक्रम, आंदोलन, किसानों के मुद्दों तथा भूमि अभिग्रहण एवं कई बिल जैसे BRAI आदि के खिलाफ करीम नगर (आंध्र प्रदेश), आलूचासी कल्याण मंच (वेस्ट बंगाल) में कार्यक्रम हुए। स्थान–स्थान पर किसान पंचायतों का सफल आयोजन।

स्वदेशी जुटान–दिल्ली (3–4 सितंबर 2011) – काले धन पर आवाज उठाने, भ्रष्टाचार एवं व्यवस्था परिवर्तन से संबंधित विभिन्न विचारधारों के नेता दिल्ली में संगठित हुए। इसमें 174 संगठनों के 900 लोगों ने भाग लिया।

खुदरा व्यापार में विदेशी निवेश – इस मुद्दे पर राष्ट्रव्यापी बंद दिसंबर 2011 को हुआ। हस्ताक्षर अभियान के अंतर्गत 300 स्थानों पर व्यापारियों के 38000 हस्ताक्षर कराए गए। – व्यापारी संगठनों एवं उद्यमियों के सहयोग से एक बड़ी सफलता।

चीन के आर्थिक आक्रमण, भौगोलिक आक्रमण के खिलाफ सारे देश में 2011 से प्रबल जन–जागरण जारी।

राज्यवार आंदोलन – हिमाचल प्रदेश में स्की–विलेज आंदोलन, आंध्र प्रदेश में बुनकर व हल्दी आंदोलन, पुरी (उड़ीसा) में वेदांता यूनिवर्सिटी विरोधी आंदोलन, बंगाल के आलू उत्पादकों की समस्या पर आंदोलन तथा खाड़ी देशों में गए मजदूरों के हित में आंदोलन।

❑❑❑

करणीय सात सूत्र

जो काम स्वदेशी जागरण मंच के कार्यकर्ताओं और विभिन्न स्तर की ईकाईयों को करने चाहिए उन्हें 7 सूत्रों में बांटकर यहां दिया जा रहा है। इन 7 सूत्रों में से जितनी भी बातें संभव हों, उतनी लागू करने का प्रयास करना चाहिए–

1. **साहित्य** (स्वदेशी पत्रिका): किसी भी व्यक्ति को स्वदेशी आंदोलन में प्रेरित करने के लिए स्वदेशी का साहित्य पढ़ना, पढ़ाना पहली आवश्यकता है। हमारे यहां पर 4 प्रकार का साहित्य उपलब्ध है, और यह चारों प्रकारों को एक जगह पर पढ़ना हो तो स्वदेशी पत्रिका पर्याप्त है। चार प्रकार के साहित्य हैं–

क. प्राचीन साहित्यः इसमें चाणक्य के अर्थशास्त्र से लेकर गांधीजी, धर्मपाल जी, पं. दीन दयाल उपाध्याय, श्री गुरूजी, दत्तोपंत ठेंगड़ी आदि का साहित्य इस श्रेणी में आता है। इसके द्वारा हम भारतीय अर्थशास्त्र की मूल बातें ग्रहण कर सकते है। श्री एम.जी. बोकरे की पुस्तक 'हिन्दू अर्थशास्त्र' भी सारांश में उपर्युक्त साहित्य का दिग्दर्शन कराती है।

ख. वर्तमान लेखक जैसे श्री गुरूमूर्ति, श्री जितेन्द्र बजाज, श्री के.एन. गोविन्दाचार्य, डॉ. मुरली मनोहर जोशी आदि–आदि। इसके अतिरिक्त स्तंभ लेखक जो आर्थिक विषयों पर लिखते हैं जैसे डॉ. देवेन्द्र शर्मा, श्री पी. साईनाथ, डॉ. अश्विनी महाजन, डॉ. भरत झुनझुनवाला, डॉ. बजरंग, श्री राजीव दीक्षित आदि। विदेशी लेखक जैसे जोसेफ स्टिग्लिट्ज (नोबेल विजेता), मार्टिन खोर आदि का साहित्य भी वर्तमान वैश्विकरण प्रक्रिया के घातक परिणाम समझाने के लिए उपयोगी है।

ग. पत्र–पत्रिकाएंः स्वदेशी पत्रिका के अतिरिक्त भारतीय पक्ष, आजादी बचाओ आंदोलन, सुनीता नारायण की पत्रिका 'इंडिया टुगेदर' व वंदना शिवा की पत्रिका 'बीजा' भी इन सब विषयों पर प्रकाश डालती है।

घ. वेबसाइट्स (अंतरताना) : स्वदेशी जागरण मंच की वेबसाइट www.swadeshionline.in है। इसमें मंच की भूमिका समझने के लिए काफी सामग्री है। जो प्रश्न बार–बार पूछे जाते हैं, उनको भी FAQ शीर्षक तथा प्रमुख व्यक्तियों के अद्यतन लेख, ब्लाग आदि भी इसमें दिए गए है।

साहित्य प्रमुख व पत्रिका प्रमुख विशेष रूप से इन कार्यों को देखते है। इनके साथ धीरे–धीरे एक सहयोगी टोली भी जोड़नी चाहिए।

2. **मिलन : क.** दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष है – कार्यकर्ताओं के आपसी मेलजोल की व्यवस्था करना। इसके लिए साप्ताहिक कार्यकर्ता बैठक व मासिक विचार मंडल अर्थात विचार गोष्ठी, सेमिनार आदि आवश्यक हैं। इन

कार्यक्रमों में अनौपचारिकता, प्रश्नोत्तर व विचार विमर्श को पर्याप्त महत्व देना चाहिए। अच्छा होगा कि स्वदेशी पत्रिका के किसी विषय को आधार बनाकर परिचर्चा रखी जाएं ताकि सभी प्रमुख लोग उस विषय को पहले से पढ़कर आएं। वक्ता यथासंभव स्थानीय हो और उससे छोटी टोली में पहले विषय के बिंदुओं पर विचार विमर्श होना अच्छा रहता है। यदि विषय के 2–3 पक्षों को रखने के लिए अलग–अलग वक्ता हों तो और भी अच्छा रहता है। कार्यक्रम में परिचय, धन्यवाद, अध्यक्षता, सूत्रधार, मंच संचालन आदि दायित्व अलग–अलग लोगों में बांटने से अधिक लोगों की भागीदारी होती है।

ख. स्वदेशी जागरण मंच (स्वजाम) के कुछ कार्यक्रम होते ही हैं, जिनके द्वारा कार्यकर्ता का प्रशिक्षण होता है। जैसे स्वदेशी दिवस अर्थात् बाबू गेनू का बलिदान दिवस 12 दिसंबर, स्वदेशी सप्ताह जो कि **25 सितंबर दीन दयाल उपाध्याय जी की जयंती से 2 अक्टूबर महात्मा गांधी जयंती, पूज्य दत्तोपंत ठेंगड़ी जी का जन्मदिन 10 नवंबर,** स्वजाम के प्रथम संयोजक डॉ. बोकरे का जन्म दिवस 18 मई, 5 जून को पर्यावरण दिवस या 28 अगस्त को जोधपुर, खेजडली ग्राम की शहीद अमृता देवी बिश्नोई का बलिदान दिवस, मकर सक्रांति 14 अप्रैल, आदि कुछ महत्वपूर्ण तिथियां हैं। जून–जुलाई मास के निकट राष्ट्रीय विचार वर्ग व नवंबर–दिसंबर में राष्ट्रीय सभा/सम्मेलन का आयोजन होता है। कार्यक्रम बनाते समय इन तिथियों का भी ध्यान रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त जिला, प्रांतीय सम्मेलन करने चाहिए।

ग. जब कभी एक अंतराल के बाद कार्यकर्ता इकक्ठे हों तो इस बीच में उन्होंने जो कुछ स्वदेशी विचार संबंधी पढ़ा हो, सुना हो, अथवा समाचार पत्रों की ऐसी कतरनें इक्कठी की हों – उन पर चर्चा, आदान–प्रदान आदि होना व आगामी कार्यक्रमों की चर्चा भी काफी लाभप्रद रहती है। इसके लिए अलग से किसी वक्ता आदि तय करने की आवश्यकता भी नहीं पड़ती।

घ. विचार मंडल प्रमुख इस काम के लिए अपने साथ एक टोली का निर्माण करें– ऐसी अपेक्षा है।

3. आंदोलन : क. तीसरी महत्वपूर्ण गतिविधि है धरना, प्रदर्शन, आंदोलन आदि। इसके द्वारा युवा शक्ति भी जुड़ती है और संगठन की धार भी तेज होती है। मास दो मास में एक बार ऐसा प्रदर्शन अति आवश्यक है। इसके अतिरिक्त जब भी कोई ऐसा विषय मिले तो उसके लिए प्रदर्शन आदि करने का स्वभाव हर इकाई का बनना चाहिए।

ख. इन कार्यक्रमों के लिए आवश्यक सामग्री यथा झंड़े, बैनर, तख्तियां, नारे, पुतले (दहन हेतु) कुछ ऐसी चीजें है जिनके द्वारा समाज में सरलता से

इन विषयों को ले जाया जा सकता है।

ग. स्थान चयन का महत्व : भीड़–भाड वाले सार्वजनिक स्थानों का इन प्रदर्शनों के लिए चयनित करना अति महत्वपूर्ण है।

घ. ऐसे अवसरों पर उचित नारे, जयघोष छोटे भाषण और वितरण के लिए पहले से तैयार संक्षिप्त परचे, (पेम्फलेट, कर–पत्रक) देना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त मीडिया को पहले से ही समय आदि की जानकारी देना आवश्यक है। आंदोलन अपने मंच का प्राण है। अतः इसके लिए पर्याप्त ध्यान देना आवश्यक है। संघर्ष वाहिनी प्रमुख मुख्यतः इस काम को अपनी टोली के साथ गति देता है।

4. प्रचार माध्यम (मीडिया) : क. समय पूर्व प्रैस–विज्ञप्ति (प्रेस ब्रीफ) तैयार करना और उसकी पर्याप्त प्रतियां निकालकर वितरित करना महत्वपूर्ण पक्ष है। विज्ञप्ति की जानकारियां व आंकड़े अच्छी तरह देखभाल कर लिखने चाहिए। हिन्दी व अंग्रेजी व स्थानीय भाषा की अलग से प्रेस ब्रीफ तैयार करना अधिक लाभदायक रहता है।

ख. समाचार पत्र व अन्य माध्यमों को सप्ताह पूर्व कार्यक्रम की जानकारी लिखित में देना व व्यक्तिगत वार्ता द्वारा प्रेरित करना, जिससे पत्रकारों का आने की ज्यादा संभावना है।

ग. कार्यक्रम के पश्चात कार्यक्रम के चित्र व प्रेस ब्रीफ की प्रति ई–मेल द्वारा सीधे समाचार पत्रों को भेजना और अपनी वेबसाइट पर भेजना चाहिए। इस काम को मुख्यतः प्रचार प्रमुख को देना चाहिए।

कुल मिलाकर मीडिया का महत्व अपने ध्यान में रहना चाहिए और सामान्यतः मीडिया भी स्वजाम की जानकारियों को महत्व देता ही है।

5. समन्वय, संपर्क : समविचारी संगठनों व विभिन्न आंदोलनों को चलाने वालों के साथ तालमेल बैठाना अपने आंदोलन को बल देता है। चाहे वंदना शिवा हो या खेती विरासत, थर्ड वर्ल्ड नेटवर्क हो या मेधा पाटकर, बाबा रामदेव जी हों या आजादी बचाओ आंदोलन, गांधीवादी हों या समाजवादी, साथ ही साथ मुद्दों पर आधारित तालमेल अवश्य होना चाहिए। इन संगठनों के कार्यक्रमों में जाना, आंदोलनों के लिए आपसी तालमेल व संवाद बना रहना चाहिए। इसी तरह भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ, विद्या भारती, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, विश्व हिन्दू परिषद, राष्ट्र सेविका समिति आदि संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ मिलकर एक संचालन समिति भी बनानी चाहिए। जिसकी नियमित अंतराल पर विधिवत बैठकें होनी चाहिए। जिस आंदोलन/कार्यक्रम में इन सबका सहयोग लेना हो तो प्रारंभ से ही संवाद रहे

और हर चरण पर इक्कठे योजना बनानी चाहिए। इनसे संवाद, सहयोग व सहकार के त्रिसूत्र को बनाए रखने में मुख्य भूमिका संपर्क प्रमुख की रहती है।

6. आर्थिक पक्ष : उपर्युक्त सब कार्यक्रमों को सफल करने के लिए धन की आवश्यकता रहती ही है। अतः प्रारंभ से ही इसकी समुचित व्यवस्था सोचनी चाहिए। इसके लिए समर्थक अभियान, मासिक/वार्षिक सहयोग दाता तैयार करने, स्मारिका (सोवेनियर), **स्वदेशी मेला व स्वदेशी पत्रिका के लिए विज्ञापन एकत्र करना** आदि कुछ माध्यम हैं। सामान्यतः एक कार्यक्रम करते समय अगले कार्यक्रम के लिए भी कुछ धन संग्रह करना आवश्यक होता है। इसी प्रकार केंद्राश के लिए भी और बाहर से बुलाए गए कार्यकर्ता/वक्ता आदि को किराया आदि देना भी स्थानीय इकाई का ही दायित्व बनता है। कुछ व्यक्तियों को इस कार्य के लिए विशेष रूप से तैयार करना लाभदायक रहता है। इसी प्रकार कार्यकर्ता टोली के सामने हर कार्यक्रम के बाद आय–व्यय का उचित ब्यौरा रखना आर्थिक पारदर्शिता व शुचिता के लिए आवश्यक है।

7. संरचना, संगठन : क. यद्यपि स्वजाम संगठन न होकर मंच है तो भी उपर्युक्त सब कामों को सफल करने के लिए एक सक्षम कार्यकर्ता टोली हर इकाई पर आवश्यक है। क्षेत्र, प्रांत, जिला, खंड, नगर व ग्राम स्तर पर यथासंभव ये टोलियां बनाना एक महत्वपूर्ण कार्य है। स्वजाम के मुख्य 4 कार्य है– क. आंदोलन, ख. अध्ययन/शोध, ग. रचनात्मक कार्य, व घ. संपर्क या नेटवर्किंग/संपर्क और सबसे तालमेल रखना। इन चारों कामों की आवश्यकता को देखकर उपयुक्त व्यक्तियों की तलाश करते रहना चाहिए।

ख. समय–समय पर इन्हें सक्रिय रखने व उचित प्रशिक्षण के लिए कार्यशाला अध्ययन शिविर व प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। वर्ष में एक बार लगने वाले केंद्रीय विचार वर्ग में भी इन कार्यकर्ताओं को पूर्व तैयारी के साथ उपस्थिति बहुत उपयोगी रहती है। इसके लिए समय पूर्व उनकी सूची बनाना व तैयारी करवानी चाहिए।

ग. इन सभी कार्यकर्ताओं को स्वजाम के लिए स्थानीय स्तर पर समय देना, दूसरी इकाईयों पर प्रवास करना कार्यवृद्धि के लिए आवश्यक है। **प्रवास व उसकी उचित व्यवस्था कार्यवृद्धि के लिए रामबाण है।**

घ. वर्ष में राष्ट्रीय सभा/सम्मेलन, विचार वर्ग, प्रांतीय सम्मेलन व अन्य बैठकों के लिए समय निकालना व वापिस आकर अन्य लोगों को उसकी जानकारी देना भी एक आवश्यक अंग है।

ड. उपर्युक्त सातों कामों को करने के लिए निम्न प्रकार के दायित्व

होने चाहिए। संयोजक, सहसंयोजक, संचालक, संगठक, संघर्ष वाहिनी प्रमुख, विचार मंडल प्रमुख, संपर्क प्रमुख, प्रकोष्ठ प्रमुख, पत्रिका प्रमुख, साहित्य प्रमुख, प्रचार प्रमुख, कार्यालय प्रमुख, कोष प्रमुख, महिला प्रमुख, तरुण प्रमुख आदि 15 ऐसी जिम्मेवारियां है जो कार्यकर्ताओं की मनोस्थिति, क्षमता व मनःस्थिति उपलब्धता देखकर देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त एक–एक विषय पर जैसे कृषि, खुदरा व्यापार, शिक्षा, न्याय व्यवस्था, परिवार व्यवस्था आदि को देखने के लिए अलग से प्रकोष्ठ भी बनाए जा सकते है, जिनकी देखभाल प्रकोष्ठ प्रमुख को प्रमुखता से करनी चाहिए। स्थान–स्थान पर टोली बनाकर स्वदेशी मेलों का आयोजन भी इकाई की वार्षिक गतिविधियों में से एक हो सकता है जो अपने कार्य को बल प्रदान करता है।

सारांश : उपर्युक्त सातों काम केवल मात्र दिशा दर्शन के लिए है और संकेत मात्र है। अनेक कार्यकर्ताओं से विचार–विमर्श करके ही इन्हें सूचीबद्ध किया गया है। तो भी इसके अतिरिक्त भी कुछ काम ध्यान में आएं तो इन शीर्षकों के अंदर यथासंभव समाविष्ट करने चाहिए। समय–समय पर अपने कार्य का विश्लेषण करने के लिए इन बिंदुओं को कार्यकर्ताओं के मध्य चर्चा के लिए रखना चाहिए व वृत्त भी एकत्र करना चाहिए। ध्यान रखें, स्वजाम के उद्देश्यों के अनुरूप स्थानीय मुद्दों को भी अवश्य शामिल करना चाहिए।

❑❑❑

मन स्वदेशी बनाएं

लोकमान्य तिलकजी जब पुणे में रहते थे तो प्रतिदिन सुबह वे फर्ग्युसन महाविद्यालय की ओर घूमने जाया करते थे। एक दिन वे घूमने जा रहे थे तो कुछ विद्यार्थी दौड़कर उनके साथ हो लिए, वे मानों उनकी ही प्रतिक्षा में ही थे।

तिलकजी बोले, 'बोलो, क्या काम है? टोली का मुखिया बोला, 'स्वदेशी स्वीकार–विदेशी बहिष्कार' का आपका विचार हमें जंच गया है और हम सभी ने उसे आचरण में लाने का निश्चय किया है। आप हमें स्वदेशी के संबंध में एक छोटा सा संदेश दें।

तिलकजी ने पलभर सोचा फिर बोले, 'मन स्वदेशी बनाओ'। आशय भरे तीन शब्द। ये तीन शब्द स्वदेशी के विषय में अनेक संदेहों का निराकरण करने में आज भी सक्षम है। ❑❑

संपादक – एक परिचय

श्री अरूण ओझा – *राष्ट्रीय संयोजक, स्वदेशी जागरण मंच।*

मूलतः जहानाबाद जिला (बिहार) के शेसाम्बा गांव में जन्म। वर्तमान में पटना में निवास। बैंक में अधिकारी। गत 40 वर्षों से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद, भारतीय मजदूर संघ व स्वदेशी जागरण मंच के माध्यम से सामाजिक कार्यक्रमों, आंदोलनों में सक्रिय। उच्चकोटि के वक्ता व कुशल संगठक।

मुद्रक
राधे ग्राफिक (प्रिंटिंग यूनिट)
289, मंजिल मोठ, साउथ एक्स पार्ट–2,
नई दिल्ली – 110 049
मो. 9213231187

सज्जा एवं टंकन
श्री सुदामा दीक्षित

प्रकाशक
स्वदेशी जागरण मंच
''धर्मक्षेत्र'', बाबू गेनू मार्ग,
सेक्टर–8, आर.के.पुरम्, नई दिल्ली–22
दूरभाषः 011–26184595,
Website: www.swadeshionline.in

बने राष्ट्र का धर्म स्वदेशी

बने राष्ट्र का धर्म स्वदेशी, वैभव मंत्र स्वदेशी ।
स्वतंत्रता का प्राण स्वदेशी, हो युग धर्म स्वदेशी ।।

भारत की वत्सल गोदी में, पोषित राष्ट्र हमारा ।
मातृभूमि के रस से सिंचित, तन,मन, जीवन सारा ।
भारत माता गौरव के हित, ले संकल्प स्वदेशी ।।
हो युग धर्म स्वदेशी ....

भूल गए क्या धर्म है अपना, विस्मृत चिंतन धारा ।
शक्ति पुज्ज यह देश हमारा, अपमानित क्यों द्वारा ।
दुःख दास्य को दूर हटाने, संबल श्रेष्ठ स्वदेशी ।।
हो युग धर्म स्वदेशी ....

आर्थिक आजादी को खतरा, विदेशियों का डेरा ।
चारों ओर विषमता छाए, छा जाए अंधेरा ।
प्रभात वेला हो रही है, चमके सूर्य स्वदेशी ।।
हो युग धर्म स्वदेशी ....

ग्राम नगर क्या घर–घर में हो, जय जय स्वदेशी नारा ।
दसों दिशा हो सुख–शांति, लेकर यही सहारा ।
शोषित दुनिया मुक्त बनें, गूंजे गान स्वदेशी ।।
हो युग धर्म स्वदेशी ....

❑❑❑